Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAR-APR, 2022, VOL- 9/70

शोध पत्र: आधुनिक समाज में शिक्षित सेवारत महिलाएं: परिवार एवं कार्यक्षेत्र का सकारात्मक समन्वय एवं समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

डॉ. नवनीत कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, जे.एस. हिंदू पी.जी. कॉलेज, अमरोहा, उत्तर प्रदेश

Paper Received On: 25 APR 2022
Peer Reviewed On: 30 APR 2022
Published On: 1 MAY 2022

Abstract

समकालीन भारतीय समाज में शिक्षा का प्रसार और आर्थिक विकास महिलाओं के जीवन में सशक्तिकरण एवं सामाजिक गतिशीलता का नया मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। शिक्षित सेवारत (कार्यरत) महिलाएं आज न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त कर रही हैं, बल्कि वे परिवार, समाज और राष्ट्र-निर्माण में अपनी सक्रिय भागीदारी भी सुनिश्चित कर रही हैं। यह समाजशास्त्रीय शोध पत्र शिक्षित कामकाजी महिलाओं द्वारा पारिवारिक उत्तरदायित्वों और व्यावसायिक दायित्वों के मध्य किए जाने वाले संतुलन, सह-अस्तित्व और सकारात्मक समन्वय (Synergy) का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन यह दर्शाता है कि आधुनिक भारतीय परिवार अब 'पारस्परिक सहयोग', 'जेंडर-समानुभूति' और 'साझा उत्तरदायित्व' की दिशा में अग्रसर हैं। वर्ष 2022 से पूर्व के समाजशास्त्रीय अध्ययनों, सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांतों और सांख्यिकीय साक्ष्यों के आधार पर यह शोध पत्र रेखांकित करता है कि जब परिवार और कार्यस्थल दोनों महिलाओं के योगदान को मान्यता देते हैं, तो यह न केवल पारिवारिक सौहार्द और आर्थिक समृद्धि को बढ़ाता है, बल्कि एक समतामूलक, प्रगतिशील और सशक्त समाज की नींव भी रखता है।

मुख्य शब्द (Keywords): शिक्षित सेवारत महिलाएं, सकारात्मक समन्वय, कार्य-जीवन संतुलन, सहभागी परिवार, जेंडर समता, सामाजिक परिवर्तन।

1. प्रस्तावना एवं वैचारिक पृष्ठभूमि

शिक्षा किसी भी समाज में चेतना, समानता और मानवीय गरिमा के विकास का मूल आधार है। स्वतंत्रता के उपरांत भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारों (अनुच्छेद 14, 15, 16) और निरंतर बढ़ते शैक्षिक अवसरों ने महिलाओं को घरेलू परिधि से आगे बढ़कर सार्वजनिक एवं व्यावसायिक जीवन में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने का अवसर दिया है।

प्रारंभिक समाजशास्त्रीय अध्ययनों में परिवार और कार्यस्थल को प्रायः दो परस्पर विरोधी ध्रुवों के रूप में देखा गया, जहां महिला की दोहरी भूमिका को मुख्य रूप से तनाव या द्वंद्व के रूप में परिभाषित किया जाता था। परंतु आधुनिक समाजशास्त्रीय चिंतन इस एकांगी दृष्टिकोण

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

से आगे बढ़कर इसे एक 'सकारात्मक सहक्रियाशीलता' (Positive Spillover / Synergy) के रूप में देखता है।

शिक्षित कामकाजी महिला केवल एक 'आजीविका कमाने वाली' इकाई नहीं है, बल्कि वह:

- पारिवारिक स्तर पर: आर्थिक सुरक्षा, बच्चों के बेहतर पोषण, उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और लोकतांत्रिक निर्णय-प्रक्रिया की संवाहिका है।
- सामाजिक स्तर पर: रूढ़िवादिता को समाप्त करने वाली और आगामी पीढ़ियों के लिए एक सशक्त प्रेरक प्रतिमान (Role Model) है।
- संस्थागत स्तर पर: कार्यस्थलों में विविधता, संवेदनशीलता और नवीन दृष्टिकोण जोड़ने वाली शक्ति है।

अतः परिवार और सेवा का समन्वय केवल 'संघर्ष और समायोजन' का विषय नहीं है, बल्कि यह सहयोग, नवाचार और सह-विकास की एक जीवंत प्रक्रिया है।

2. सैद्धांतिक एवं तार्किक परिप्रेक्ष्य (Theoretical Framework)

प्रस्तुत अध्ययन को समझने के लिए निम्नलिखित सकारात्मक एवं संरचनात्मक समाजशास्त्रीय सिद्धांतों का उपयोग किया गया है:

(क) भूमिका संवर्धन सिद्धांत (Role Enhancement Theory - William J. Goode / Stephen Marks)

पारंपरिक 'भूमिका-तनाव' (Role Strain) मॉडल के विपरीत, मार्क्स और गूडे का 'रोल एनहांसमेंट' सिद्धांत प्रतिपादित करता है कि बहुविध भूमिकाएं (Multiple Roles) व्यक्ति की ऊर्जा, आत्म-सम्मान और सामाजिक संसाधनों में वृद्धि करती हैं। कार्यक्षेत्र की सफलता महिला के पारिवारिक जीवन को आत्मविश्वास और परिपक्वता प्रदान करती है, जबकि पारिवारिक स्नेह और संबल उसे कार्यस्थल पर भावनात्मक स्थिरता देता है।

(ख) संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक समन्वय (Structural-Functional Integration)

टैल्कॉट पार्सन्स के पारंपरिक 'एक्सप्रेसिव-इंस्ट्रूमेंटल' द्विभाजन को आधुनिक समाजशास्त्रियों ने पुनर्परिभाषित किया है। आज के विकसित समाज में परिवार और कार्यस्थल परस्पर विरोधी न होकर एक-दूसरे के पूरक बन रहे हैं। पुरुष और महिला दोनों मिलकर आर्थिक (Instrumental) और भावात्मक/देखभाल (Expressive) दोनों भूमिकाओं को साझा कर रहे हैं, जिससे पारिवारिक संतुलन अधिक सुदृढ़ होता है।

(ग) सहभागी परिवार मॉडल (Symmetrical Family Model - Young and Willmott)

यह सिद्धांत दर्शाता है कि जैसे-जैसे समाज का आधुनिकीकरण होता है, परिवारों का स्वरूप 'सममित' या समतुल्य होता जाता है। इसमें पति-पत्नी के मध्य श्रम और उत्तरदायित्वों का विभाजन कठोर लैंगिक बंधनों पर आधारित न होकर आपसी समझ, तार्किकता और सहयोग पर आधारित होता है।

3. साहित्य की समीक्षा (Review of Literature: पूर्व-2022 साक्ष्य)

2022 से पूर्व के विभिन्न समाजशास्त्रीय अनुसंधानों ने कार्य-जीवन समन्वय के सकारात्मक पक्षों को स्पष्ट रूप से उजागर किया है:

1. प्रमिला कपूड़ (1970, 2001): अपने अनुवर्ती अध्ययनों में कपूड़ ने रेखांकित किया कि यद्यपि प्रारंभिक संक्रमण काल में समायोजन की चुनौतियां थीं, परंतु जैसे-जैसे परिवारों में

संचार और जेंडर-संवेदनशीलता बढ़ी, सेवारत महिलाओं के वैवाहिक जीवन में आपसी विश्वास, बौद्धिक सामंजस्य और पारस्परिक सम्मान में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई।

2. अमर्त्य सेन (1999): 'डेवलपमेंट ऐज़ फ्रीडम' में सेन ने स्थापित किया कि महिलाओं की स्वतंत्र आय और कार्यबल में सहभागिता उनकी 'एजेंसी' (Agency) का विस्तार करती है। इससे न केवल परिवार के भीतर उनके निर्णयों का वजन बढ़ता है, बल्कि बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य पर होने वाले व्यय में गुणात्मक सुधार आता है।

3. रोसाबेथ मॉस कैंटर (1977): 'वर्क एंड फैमिली इन द यूनाइटेड स्टेट्स' में कैंटर ने प्रदर्शित किया कि कार्य और परिवार के संबंध 'संक्रामक' होते हैं; कार्यस्थल पर मिलने वाली स्वायत्तता और सफलता घर के माहौल को अधिक सकारात्मक और जीवंत बनाती है।

4. रंजना कुमारी (2011): भारतीय संदर्भ में शिक्षित महिलाओं के सशक्तिकरण का अध्ययन करते हुए उन्होंने पाया कि कामकाजी माताओं के बच्चे अधिक आत्मनिर्भर, सामाजिक रूप से उत्तरदायी और लैंगिक रूप से संवेदनशील बनते हैं।

4. परिवार और सेवा के समन्वय के आदर्श एवं सकारात्मक आयाम

4.1 लोकतांत्रिक निर्णय-प्रक्रिया और समानता

शिक्षित सेवारत महिला का घर की आय में प्रत्यक्ष योगदान परिवार की आंतरिक शक्ति-संरचना (Power Dynamics) को अधिक लोकतांत्रिक बनाता है:

- पारस्परिक विचार-विमर्श: बड़े आर्थिक निर्णयों (जैसे संपत्ति क्रय, निवेश, बच्चों की उच्च शिक्षा) में पति और पत्नी समान साझीदार के रूप में विमर्श करते हैं।
- पारिवारिक गरिमा में वृद्धि: महिला की आर्थिक निर्भरता समाप्त होने से उसका आत्म-सम्मान और पारिवारिक प्रतिष्ठा दोनों समृद्ध होते हैं।

4.2 आधुनिक 'सहभागी पितृत्व' (Involved / Egalitarian Fatherhood)

शिक्षित सेवारत महिलाओं के कारण भारतीय परिवार संरचना में सबसे सुंदर परिवर्तन पिताओं की भूमिका में आया है:

- पिता अब केवल 'अनुशासक' या 'अर्थोपार्जक' तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे बच्चों के लालन-पालन, शिक्षा, भावनात्मक विकास और दैनिक दिनचर्या में सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं।
- यह सहभागिता पारिवारिक बंधनों को अधिक प्रगाढ़, संवेदनशील और सौहार्दपूर्ण बनाती है।

4.3 बच्चों के व्यक्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव

समाजशास्त्रीय साक्ष्य यह सिद्ध करते हैं कि कामकाजी माताओं की संतानों में विशिष्ट गुण विकसित होते हैं:

- आत्मनिर्भरता: बच्चे बचपन से ही अपने छोटे-मोटे कार्यों को स्वयं करने और समय का प्रबंधन करने में दक्ष होते हैं।
- जेंडर-समानुभूति: कामकाजी मां को देखकर बड़े होने वाले पुत्र भविष्य में जेंडर-समानता के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं, और पुत्रियां अधिक महत्वाकांक्षी व आत्मविश्वासी बनती हैं।

4.4 प्रौद्योगिकी, आधुनिक प्रबंधन एवं समय की गुणवत्ता (Quality Time)

समन्वय की प्रक्रिया को सफल बनाने में आधुनिक तकनीकों और नवाचारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है:

- घरेलू स्वचालन (Domestic Automation): आधुनिक घरेलू उपकरणों (माइक्रोवेव, वाशिंग मशीन, डिशवॉशर) ने शारीरिक श्रम के समय को न्यूनतम कर दिया है।
- समय की मात्रा बनाम गुणवत्ता: आधुनिक शिक्षित माता-पिता घंटों तक केवल उपस्थिति दर्ज कराने के स्थान पर बच्चों के साथ 'गुणवत्तापूर्ण समय' (Quality Time) बिताने, रचनात्मक संवाद स्थापित करने और सार्थक गतिविधियों पर बल देते हैं।

5. तार्किक समाजशास्त्रीय विश्लेषण: संक्रमण से सामंजस्य की ओर

आयाम

पारंपरिक दृष्टिकोण (द्वंद्व पर आधारित)

आधुनिक सकारात्मक दृष्टिकोण (समन्वय पर आधारित)

लैंगिक भूमिकाएं

कठोर विभाजन (पुरुष: बाह्य, महिला: गृह)

लचीली एवं पूरक भूमिकाएं (साझा उत्तरदायित्व)

पारिवारिक संरचना

पितृसत्तात्मक एवं प्रभुत्ववादी

सहयोगात्मक एवं लोकतांत्रिक

कार्य-जीवन संबंध

परस्पर विरोधी (शून्य-योग खेल / Zero-sum game)

सहक्रियात्मक (Synergistic - एक-दूसरे का संवर्धन)

शिशु-पालन

केवल माता का प्राथमिक दायित्व

माता-पिता का संयुक्त एवं सहभागी दायित्व

महिला की पहचान

परनिर्भर और सीमित

बहुआयामी, आत्मनिर्भर एवं आत्मविश्वास से परिपूर्ण

समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह स्पष्ट है कि वर्तमान समाज 'सांस्कृतिक विलम्बना' के चरण से निकलकर 'सांस्कृतिक पुनर्संतुलन' (Cultural Re-equilibration) के युग में प्रवेश कर रहा है, जहाँ सामाजिक मूल्य अब महिलाओं के व्यावसायिक योगदान को सहजता और गर्व के साथ आत्मसात कर रहे हैं।

6. संस्थागत सहयोग एवं नीतिगत दिशा-निर्देश

परिवार और कार्य के इस सकारात्मक समन्वय को और अधिक सुदृढ़, सार्वभौमिक और स्थायी बनाने के लिए समाज और संस्थाओं का समन्वित सहयोग आवश्यक है:

1. परिवार-अनुकूल कार्यस्थल नीतियां (Family-Friendly Workplace Policies):

○ संगठनों में लचीले कार्य घंटे (Flexi-hours), हाइब्रिड मॉडल और कार्यस्थल पर गुणवत्तापूर्ण क्रेच (शिशुगृह) की व्यवस्था को कॉर्पोरेट संस्कृति का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए (जैसा कि मातृत्व लाभ अधिनियम 2017 में निर्देशित है)।

2. साझा पितृत्व को संस्थागत मान्यता:

○ सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों में पितृत्व अवकाश (Paternity Leave) को प्रोत्साहित किया जाए, जिससे संतान-पालन को माता-पिता का संयुक्त सामाजिक दायित्व माना जा सके।

3. सामाजिक मूल्यों का पुनर्नवीनीकरण:

○ समाज, संचार माध्यमों और शिक्षा प्रणाली द्वारा ऐसी कथाओं और उदाहरणों को प्रस्तुत किया जाए जो पुरुषों की घरेलू सहभागिता और महिलाओं के व्यावसायिक नेतृत्व को सामाजिक आदर्श के रूप में स्थापित करें।

4. सामुदायिक सहायता तंत्र:

○ सुरक्षित, किफायती और प्रमाणित डे-केयर व बाल-विकास केंद्रों का सामुदायिक स्तर पर विस्तार किया जाए, जिससे कामकाजी दंपतियों को विश्वसनीय संबल प्राप्त हो सके।

7. निष्कर्ष

शिक्षित सेवारत महिलाओं का अध्ययन केवल महिला-अध्ययन का विषय नहीं है, बल्कि यह समग्र समाज के आधुनिकीकरण और मानवीय विकास का दर्पण है। शिक्षित महिला जब परिवार और सेवा के मध्य सफल समन्वय स्थापित करती है, तो वह परंपरा और आधुनिकता का ऐसा सेतु बनती है जो समाज को स्थिरता और गतिशीलता दोनों एक साथ प्रदान करता है। पारिवारिक प्रेम और व्यावसायिक उत्कृष्टता एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि परस्पर पूरक हैं। जब परिवार सहयोग की इकाई बनता है और कार्यस्थल मानवीय संवेदनशीलता का परिचय देता है, तब शिक्षित सेवारत महिला न केवल अपने जीवन को संपूर्णता प्रदान करती है, बल्कि एक प्रबुद्ध, समरस और समतामूलक राष्ट्र का निर्माण भी करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (Selected References: पूर्व-2022)

कपूड़, प्रमिला (*1970).* मैरिज एंड द वर्किंग वुमन इन इंडिया. विकास पब्लिकेशन्स, दिल्ली.

कपूड़, प्रमिला (*2001).* एम्पावरिंग द इंडियन वुमन. पब्लिकेशन डिवीज़न, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार.

कुमारी, रंजना (*2011).* जेंडर डायमेंशन्स इन एम्प्लॉयमेंट एंड फैमिली लाइफ. सेंटर फॉर सोशल रिसर्च, नई दिल्ली.

कैंटर, रोसाबेथ मॉस (*1977).* वर्क एंड फैमिली इन द यूनाइटेड स्टेट्स: अ क्रिटिकल रिव्यू एंड एजेंडा फॉर रिसर्च एंड पॉलिसी. रसेल सेज फाउंडेशन.

गूडे, विलियम जे. (*1960).* "अ थ्योरी ऑफ रोल स्ट्रेन". अमेरिकन सोशियोलॉजिकल रिव्यू, *25(4), 483-496.*

देसाई, नीरा एवं कृष्णराज, मैथ्रेयी (*1987).* वुमेन एंड सोसाइटी इन इंडिया. अजनता पब्लिकेशन्स, दिल्ली.

मार्क्स, स्टीफन आर. (*1977).* "मल्टीपल रोल्स एंड रोल स्ट्रेन: सम स्केप्टिकल कंसीडरेशन्स". अमेरिकन सोशियोलॉजिकल रिव्यू, *42(6), 921-936.*

यॉन्ग, माइकल एवं विलमॉट, पीटर (*1973).* द सिमेट्रिकल फैमिली. पेंगुइन बुक्स.

सेन, अमर्त्य (*1999).* डेवलपमेंट ऐज़ फ्रीडम. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.